REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 10 | JULY - 2025

'यादों की छन्नी में' (मूल कृति 'नेनपिन जरडियल्ली) :-एक आत्मावलोकन

डॉ. सुजाता फातरपेकर
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग अध्यक्ष,
एम. एम. कला और विज्ञान महाविद्यालय, सिरसी, कर्नाटक।

'यादों की छन्नी में' यह मूलत: कन्नड़ में रचित जयप्रकाश हब्बू जी द्वारा लिखित एक संस्मरण संग्रह है। 'नेनपिन जरडियल्ली ' यह मुझे दिल को छूने वाला एक उत्कृष्ट संस्मरण है।

हिंदी में इसका अनुवाद प्रोफेसर शकीरा खानम ने किया है यह एक आत्मकथा है, जिसका शीर्षक आत्म चिंतन है। जीवन अतीत के अनुभव का ही लेखा-जोखा होता है, इसलिए मैं इसे संस्मरण के रूप में देखती हूँ। संस्मरण के प्राण उसकी आत्मीयता होती है। इसमें लेखक ने खूबसूरत से, ईमानदारी से, आत्मीयता से, सरलता से बयान किया है। जीवन के सफर में वह जिस तरह दुख-दर्द, खुशियाँ, वेदना अपने और पराये से उनके प्रेम संबंध, सब कुछ इस कृति में उजागर हुआ है।

पत्र, यात्रा वृतांत, जीवनी या संस्मरण तभी पाठकों से जुड़ पाते हैं, जब उनकी अभिव्यक्ति कलात्मक और तथ्य संवेदनात्मक हो। नहीं तो किसी और के इन विवरणों से पाठक क्यों आकर्षित हैं। ' यादों की छन्नी में' यह विवरण और घटनाएँ लेखक के जीवन के निजी अनुभव हैं। उसमें संवेदना का तत्त्व विद्यमान है। इसलिए यह पाठक को प्रभावित करते हैं। इसमें 35 शीर्षकों के अंतर्गत विभाजित इस कृति का आरंभ लेखक के पारिवारिक जीवन, माँ-बाप से, उनके पूर्वजों से और परिवार के सदस्यों से जुड़ा है।

लेखक के बचपन से लेकर घटनाओं का संसार विस्तृत तथा व्यापक हो जाता है। कुछ संस्मरणों के शीर्षक व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से जुड़े हुए हैं। उनमें लेखक के जीवन के साथ जुड़े विशिष्ट पात्रों का उल्लेख है। इनमें कुछ का संबंध जीवन के संघर्ष से है, तो कुछ व्यावहारिक रूप में उद्घाटित करते हैं। लेखक का संबंध व्यवसाय से है। मुद्रणालय में काम, वहाँ की यादें, गोवा राज्य में काम करते समय कासिम मुल्ला के साथ प्राप्त अनुभव, सरोजा भाभी, विवाह बंधन, एक दर्दनाक हादसा, जीवन का नया कदम, अंधेरी राह में रोशनी की किरण, नया रास्ता, नया मोड़ , कड़वा मोड आदि अनुभव जैसे संस्मरण संवेदना से जुड़े हैं। यह सभी लेखक का संघर्ष चित्रण प्रस्तुत करते हैं। इसमें कुछ अध्याय महत्त्वपूर्ण हैं , वह इस प्रकार हैं :- हमारे जीवनसाथी, कोने का घर, मन रूपी मर्कट, दूर हुई आजमाइश, परिपूर्णता की ओर, दर्पण, संघर्षमय जीवन की कथा।

संस्मरण वास्तव में चित्रकला जैसे होते हैं। जिस प्रकार चित्रकार कूंची और रंगों के सहारे भावों को मूर्त रूप देता है, इस तरह संस्मरण में शब्दों के सहारे भावों को अर्थपूर्ण बनता है। इस कृति में लेखक ने अपने पुराने दिनों की यादों को, अनेक मार्मिक प्रसंगों को अत्यंत सुंदर तथा कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है।

पुरानी स्मृतियाँ कुदाली की तरह होती हैं। उसके सहारे अतीत की खुदाई की जाती है और फिर इस तरह से दबा हुआ खजाना निकलकर बाहर आ जाता है। -1 खोदते-खोदते हुए हल्दीपुर में बीते दिन याद करते हैं। बचपन के खेलने-कूदने के वे दिन जीवन के समझदार दायरे थे। अगर खुशी से नाचे तो सिर से टकराती दरिद्रता के वह दायरे खुशी के क्षणों में रूदन दिल दहला देता था। बच्चे समझदार होने से पहले पिता ना होने का दर्द और माँ की पीड़ा के आँसुओं को महसूस करते थे। एक ही परिवार के बच्चों का संगठन बिखर कर छिन्न-भिन्न हो गया था। एक साथ चहकते हुए खुशी मनाते वक्त बिखरे बादलों की तरह थी उनकी स्थिति। कठिनाइयों के बीच भी मामा का सहनशीलता, समयानुसार स्थिति को समझकर सभी बच्चों को अपना मानकर प्यार से पाला।"2

प्रकाश जी अम्मा के व्यक्तित्व को रेखांकित ऐसे करते हैं जो वक्तव्य हृदय को छू लेता है।"यदि मैं अम्मा के बारे में लिखूं तो यह शाश्वत होगा क्योंकि पहला अक्षर 'अ' शब्द से कन्नड़ वर्णमाला शुरू होती है जिसका अर्थ है 'नींव'। इस नींव के आधार पर हमारा विकास होगा । 'अ' से अम्मा, 'म' से ममता यह शब्द गहरे समुद्र की तरह हैं। अम्मा का अर्थ शुद्ध या पवित्र आत्म संवेदना है। अम्मा का स्पर्श ममता भरी भावना ही दिल को धड़कती है। यह सभी विचार अम्मा के अपने जीवन में कितनी संकटो का सामना किया। अपने जीवन को कैसे घिसाया उसी के बारे में है।

आत्म निरीक्षण लेखन हमेशा प्रथम पुरुष एक वचन में होता है । यही इसकी खासियत और विशेषता है। जय हब्बू की कृति ऐसी विशेषताओं से भरी हुई है । हम आसपास की दुनिया को आत्म केंद्रित देखते हैं क्योंकि हमें जीवन की घटनाओं का ध्यान रखना होता है। मानव जीवन में जिजीविषा की आवश्यकता होती है। अर्थात यदि आप में चरित्र, चिंतन, उत्साह और परिस्थिति के अनुसार कार्य करने का साहस है तो जीत आपके जीवन का मील का पत्थर होगी। उन्होंने रियल इस्टेट व्यवसाय में ईमानदारी से काम किया, अपनी कमाई का एक छोटा सा हिस्सा दान किया है। जमीन के कारोबार से हुए मुनाफे को एक प्राथमिक विद्यालय में बैठने के लिए डेस्क-बेंच को दान के रूप में देकर कृतज्ञ हुए हैं।

वह कहते हैं कि उपलब्धि एक बलिदान की तरह है । मनुष्य को विश्वास , आत्मविश्वास और मधुरता को सफलता की सीढ़ियों की तरह अपनाना चाहिए। यह पुस्तक सिर्फ एक आत्मकथा ही नहीं बल्कि एक व्यक्तिगत विकास पुस्तक है, जो सभी को मार्गदर्शन करती है। कई मायने में पाठकों को उपयोगी जानकारी प्रदान करती है। यह एक हार - जीत की सीढ़ी है। अपने जीवन में कई कठिनाइयाँ झेलने वाले प्रकाश आज सूरज की तरह उभरे हैं। उनके साहसी व्यक्तित्व में विवेक की झलक है। इस कृति का प्रकाशन इसके साहित्यिक स्तरीयता के कारण भी महत्त्वपूर्ण है।

'यादों की छन्नी में' आत्ममंथन , (कन्नड़ में 'नेनपीन जरडियल्ली)
'मूल कन्नड़ जय प्रकाश हब्बू
हिंदी अनुवाद प्रोफेसर शकीरा खानम'